

चिरु जीवो बालिड़ी जनक कुमारि ।
 आशीशूं दियनि था सभु नर नारि ॥
 अमां सुनैना ऐं श्री जनक किशोरी
 चतुर चौंसठ कला भाव वस भोरी
 देव मुनि वन्दित साकेत सरकार ॥
 शोभा जी सागर रूप जी उज्यारी
 निमि कुल मन्डनी विदेह कुमारी
 सारो जगु गाए जंहिजो जै जै कार ॥
 मंद मंद मुश्कनि मनड़ो थी मोहे
 सुनैना जी गोद में सुकुमारी सोहे
 मैया मुखड़ो दिसी चवे बलि बलिहार ॥
 किलकि किलकि बोले तोतरे बैना
 अमड़ि जे हियंड़े भयो सुख चैना
 जनक सुनैना ठरी थिया ठार ॥
 गरीबि श्री खण्डि दियनि मंगल वाधाई
 धन्य कुखि तुंहिजी स्वामिनि ज़ाई

घर घर छांयो आ मोदु अपार ॥